

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, किंग्स, सत्र 11, भाग 1, 1 राजा 12-13, भाग 1

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

1 राजा अध्याय 12, श्लोक 1 से 24 को देखते हुए। हमारे पिछले अध्ययन में, हमने उन तरीकों के बारे में बात की थी जिसमें सुलैमान का राज्य दो भागों में विभाजित हो गया था क्योंकि वह प्रभु के नाम का सम्मान करने में विफल रहा और उसका हृदय विभाजित हो गया, जिसके परिणामस्वरूप उसका जीवन समाप्त हो गया। हमने जो सबक देखा वह यह है कि अच्छी शुरुआत के लिए कोई ट्रॉफी नहीं दी जाती है।

पुरस्कार उन लोगों के लिए है जो अच्छी तरह से समाप्त करते हैं और यही सुलैमान के जीवन की त्रासदी थी। वे पहले 11 अध्याय पुस्तक के पहले खंड का निर्माण करते हैं। दूसरा भाग अध्याय 12 से शुरू होता है और अध्याय 16 तक फैला हुआ है।

इसमें मूल रूप से सोलोमन की मृत्यु से लेकर 50-55 वर्ष, हमारे हिसाब से 930, से लेकर अहाब के आने तक के 850 वर्ष शामिल हैं। तो, जैसा कि मैंने कहा, क्षमा करें, मैंने 50 वर्ष कहा, अहाब और उसके पिता अमरी के आने के साथ 870 वर्ष। तो, हमारे पास 40 वर्षों के लिए 11 अध्याय थे और अब हमारे पास लगभग 70 वर्षों के लिए 5 अध्याय होंगे।

कहानी यहाँ सुलैमान के बेटे रहूबियाम से शुरू होती है। अध्याय 11 में हमें बताया गया था कि यारोबाम को परमेश्वर ने उत्तरी जनजातियों का राजा बनने के लिए अभिषिक्त किया था। किसी तरह सुलैमान को इस बारे में पता चल गया और उसने दाऊद के साथ शाऊल की तरह सर यारोबाम को मारने की कोशिश की, लेकिन यारोबाम मिस्र भाग गया।

मैंने पिछली बार सुझाव दिया था कि शायद यही बात यारोबाम और डेविड के बीच अंतर का कारण हो सकती है। डेविड केवल पलिशितियों के पास भाग गया, और उसने यहूदा के लोगों के साथ अपना संपर्क तब भी जारी रखा जब वह स्पष्ट रूप से पलिशितियों की सेवा कर रहा था। लेकिन यारोबाम मिस्र चला गया, बुतपरस्त देश में, और मैं केवल यही सोच सकता हूँ कि क्या वास्तव में मिस्र में बिताए गए उन वर्षों ने यारोबाम को किसी न किसी तरह से प्रभावित किया।

लेकिन हमें बताया गया है कि सुलैमान की मृत्यु और रहूबियाम के राजा बनने की खबर सुनकर यारोबाम वापस आया। और फिर लोगों ने, जैसा कि हमें पद 3 में बताया गया है, यारोबाम को बुलाया और वह और इस्राएल की पूरी सभा रहूबियाम के पास गई और अनुरोध किया। आपको आश्चर्य होता है कि क्या वास्तव में उत्तरी जनजातियाँ पहले से ही यारोबाम को बुलाने के लिए तैयार थीं, पहले से ही विभाजन के बारे में सोच रही थीं।

इस अध्याय में जो बातें मुझे दिलचस्प लगीं, उनमें से एक है ईश्वर की कृपा और मानवीय विकल्पों और कार्यों के बीच का अंतरसंबंध। फिर से, जैसा कि मैंने आपको कई बार बताया है, हमारा

दिमाग इतना बड़ा नहीं है कि ईश्वर की संप्रभुता को एक साथ रख सके। वह राजा है, और वह अपनी इच्छा और मानवीय स्वतंत्र इच्छा को पूरा करने जा रहा है।

हम एक या दूसरे गड्डे में फंस जाते हैं। खैर, मनुष्यों के पास स्वतंत्र इच्छा है; इसलिए, भगवान की संप्रभुता सीमित है। या भगवान की संप्रभुता निरपेक्ष है; इसलिए, मनुष्यों के पास वास्तविक स्वतंत्र इच्छा नहीं है।

मुझे लगता है कि जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तो हम उन लोगों के बीच परस्पर क्रिया देखते हैं जिन्हें आप एक या दूसरे से अलग नहीं कर सकते। आपको उन्हें एक दूसरे के साथ तनाव में रखना होगा और हम यहाँ यही देखते हैं। क्या यह बात पहले से तय थी? हाँ, हाँ।

अहिय्याह ने यारोबाम से भविष्यवाणी की थी और कहा था, यह एक तय सौदा है। और फिर भी, यह एक तय सौदा है, लेकिन यह मानवीय विकल्पों और मानवीय जिम्मेदारी के माध्यम से एक तय सौदा है। इसलिए यहाँ, जनजातियों ने यारोबाम को बुलाया है, यारोबाम जो जबरन श्रम का प्रभारी था, दासता नहीं, जो कनानियों के लिए था, बल्कि इन उत्तरी जनजातियों के जबरन श्रम का।

और जाहिर है, वह एक अच्छा नेता था, और उत्तरी जनजातियों ने उसके नेतृत्व का जवाब दिया था। इसलिए, जनजातियों ने यारोबाम पर एक शर्त रखी। श्लोक 4, तुम्हारे पिता ने हम पर भारी जूआ डाला था; अब वह कठोर श्रम और भारी जूआ जो उसने हम पर डाला था, उसे हल्का करो, और हम तुम्हारी सेवा करेंगे।

एक बार फिर, आपको आश्चर्य होगा कि अगर यारोबाम ने जवाब दिया होता, तो क्या वे वास्तव में उसकी सेवा करते? फिर से, हम बाइबल में बार-बार वही देखते हैं जो परमेश्वर मानवीय विकल्पों के माध्यम से अपने उद्देश्यों को पूरा करने के रचनात्मक तरीके हैं। मानवीय विकल्पों के बावजूद, वह इतना रचनात्मक है कि वह अपना काम करने में सक्षम है, हमें हेरफेर नहीं कर रहा है बल्कि हमारे माध्यम से काम कर रहा है। इसलिए, हम नहीं जानते; शायद वे करते, शायद वास्तव में, इस बिंदु पर राज्य विभाजित नहीं होता, लेकिन आगे चलकर, हम नहीं जानते। अब, स्पष्ट रूप से, अगर यारोबाम ने उनकी माँग को स्वीकार कर लिया होता, जैसा कि वे हैंडआउट में कहते हैं, तो उसे अपनी ओर से कुछ कमर कसनी होगी।

अगर आपको याद हो, तो सुलैमान ने राज्य को 12 भागों में संगठित किया था, और 12 में से प्रत्येक को हर महीने दरबार को टन भर भोजन और आपूर्ति प्रदान करने की जिम्मेदारी थी। अगर हम यहाँ भार कम करने जा रहे हैं, तो यारोबाम को अपनी कमर कसनी होगी। क्या वह ऐसा करने के लिए तैयार है? इसलिए, यह हमारे लिए है, बार-बार, हमें चुनाव करने होंगे, और हम ऐसे चुनाव कर सकते हैं, जो वास्तव में हमें बहुतायत देंगे, बहुतायत जिसकी हमें आवश्यकता नहीं है, या शायद हमें भगवान और भगवान के लोगों की बेहतर सेवा करने में सक्षम होने के लिए थोड़ा सा कसने की आवश्यकता है।

तो, यारोबाम, क्षमा करें, रहूबियाम ने समझदारी से काम लिया। वह अपने सलाहकारों के पास गया और कहा, ठीक है, दोस्तों, आप क्या सोचते हैं? क्या मुझे उस पर नरमी बरतनी चाहिए? पुराने सलाहकारों ने कहा हाँ, यह एक अच्छा विचार होगा, लेकिन युवा सलाहकारों ने कहा, ओह नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, आप उन्हें बताइए कि आपको लगता है कि मेरे पिता सख्त थे, मैं बहुत सख्त होने जा रहा हूँ। क्या आपको लगता है कि वह एक बड़े आदमी थे? आप इस बारे में कुछ नहीं जानते कि मैं कितना बड़ा हूँ।

अब मुझे आश्चर्य है कि इन दो सलाहकारों के विचार इतने अलग क्यों हैं? खैर, मुझे खेद है, लेकिन मैं पक्षपाती हूँ। मुझे लगता है कि पुराने लोग बुद्धिमान थे। मुझे लगता है कि वे इतने लंबे समय तक जीवित रहे कि उन्हें पता था कि, जैसा कि कहावत है, आप शहद से अधिक मधुमक्खियाँ पकड़ते हैं।

हाँ, आप ऐसा कर सकते हैं। आप उन्हें रियायत दे सकते हैं, और वे आपके साथ चलेंगे। शायद, शायद, उन्होंने पहले ही अपना मन बना लिया था, और यह सिर्फ सतही था; युवा लोग दूसरी तरफ़ क्यों गए? खैर, एक अर्थ में आपको शुरू से ही अपना नेतृत्व स्थापित करना बेहतर होगा, और यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो वे आपके साथ भाग जाएँगे।

खैर, इसमें कुछ समझदारी भी है। मुझे एक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक की बात याद है, जिन्होंने कहा था कि आपको पहले दिन ही अपना अधिकार स्थापित करना होगा। यदि आप उन्हें पहले दिन कुछ करने देते हैं, तो आप उन्हें पूरे साल वापस नहीं पा सकेंगे।

इसलिए, हम यह नहीं कह सकते कि यह बेवकूफी थी। लेकिन दूसरी ओर, वर्षों की बुद्धि कहती है कि लोगों के साथ दयालुता से पेश आना चाहिए, उन्हें कुछ जगह देनी चाहिए, और वे दयालुता से जवाब देंगे। खैर, जो भी हो, रहूबियाम ने कहा, बिल्कुल नहीं।

मुझे लगता है कि शायद उसे यह विचार पसंद आया। उसे रियायत देने, पीछे हटने का विचार पसंद नहीं आया, और यह मानवीय है, है न? हम ऐसे ही हैं। हमें झुकना पसंद नहीं है।

हम यह नहीं चाहते कि हम कमज़ोर दिखें। झुकने के लिए एक बहुत ही मज़बूत पुरुष या एक मज़बूत महिला की ज़रूरत होती है, कुछ ऐसा देने के लिए जो शायद आप वास्तव में देना नहीं चाहते। लेकिन यह भगवान की कृपा है।

यह ईश्वर की कृपा है जो हमें, सबसे पहले, अपने अंदर यह सुरक्षा प्रदान करती है कि हम जान सकें कि ईश्वर हमसे प्रेम करता है और कुछ देने से हम कुछ नहीं खोते। लेकिन साथ ही, उदारता की भावना भी, क्योंकि ईश्वर हमारे प्रति उदार रहा है, इसलिए हम दूसरों के प्रति उदार हो सकते हैं। लेकिन रहूबियाम कहता है, नहीं, मैं नहीं।

अब, जैसा कि मैंने कहा, मुझे लगता है कि रहूबियाम एक मज़बूत व्यक्ति के रूप में दिखना चाहता था। और मुझे लगता है कि जब उत्तरी जनजातियाँ पीछे हटती हैं, तो हम उसकी बुद्धि की कमी को देखते हैं, जब उत्तरी जनजातियाँ कहती हैं, ठीक है, ठीक है, अगर तुम्हारा यही रवैया है, तो हम यहाँ से चले जाते हैं, अपने तंबूओं में, ओह, इस्राएल, जो उन दिनों में पीछे हटने के लिए

एक सामान्य मुहावरा है। तो, क्या हुआ? श्लोक 13 में, राजा ने लोगों को कठोरता से जवाब दिया, बड़ों द्वारा दी गई सलाह को अस्वीकार कर दिया।

उसने युवकों की सलाह का पालन किया। श्लोक 15, इसलिए राजा ने लोगों की बात नहीं सुनी, क्योंकि घटनाओं का यह मोड़ यहोवा की ओर से था, ताकि वह वचन पूरा हो जो यहोवा ने शिलोनिवासी अहिय्याह के माध्यम से नबात के पुत्र यारोबाम से कहा था। ओह, ठीक है, रहूबियाम के पास वास्तव में कोई विकल्प नहीं था।

फिर से, यही बात मैंने यहाँ शुरू में कही थी। मुझे लगता है कि बाइबल इन बातों से निपटने के लिए बहुत ही कुशल तरीके से काम करती है। क्या रहूबियाम के पास कोई वास्तविक विकल्प था? मुझे लगता है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसके पास था।

वह सिर्फ एक कठपुतली नहीं था ; परमेश्वर उसके तार खींच रहा था। दूसरी ओर, उसने जो किया वह परमेश्वर के राज्य में काम करने की पूर्ति थी। इसलिए फिर से, हमारे पास मानवीय विकल्पों और ईश्वरीय संप्रभुता के बीच यह तनाव है, और हमें हमेशा उन्हें, जैसा कि मैं कहता हूँ, तनाव में रखना होगा।

जब आपको कोई चुनाव करना होता है, तो इसमें ईश्वर की इच्छा होती है, और आपको उससे पूछना चाहिए, आपकी इच्छा क्या है? इस निर्णय में आप मेरे माध्यम से क्या हासिल करना चाहते हैं? दूसरी ओर, यदि आपको कोई स्पष्ट शब्द नहीं मिल पाता है, और कभी-कभी ऐसा होता है, तो इस विश्वास के साथ अपना चुनाव करें कि ईश्वर इसके माध्यम से काम करने जा रहा है और वह अपने अच्छे उद्देश्यों को पूरा करने जा रहा है। हमें अनिश्चित रूप से जीने की ज़रूरत नहीं है। जब तक हमारा दिल हमारे पिता की इच्छा पर केंद्रित है, तब तक हम जान सकते हैं कि वह हमारे चुनावों के माध्यम से अपने अच्छे उद्देश्यों को पूरा करने जा रहा है, हमारे चुनावों के बावजूद।

लेकिन मुझे इस बारे में जो बात पसंद है, वह है ब्रह्मांड के परमेश्वर के साथ हमारे सहयोग की भावना। वह अपने अच्छे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आपका और मेरा इस्तेमाल करना चाहता है। क्यों? उसे हमारी ज़रूरत नहीं है।

अहा, लेकिन उसे हमारी ज़रूरत है। उसे हमारी संगति की ज़रूरत है। उसे हमारे साथ जुड़ने की ज़रूरत है।

वह हमसे इतना प्यार करता है कि वह कहता है, आओ, मेरी मदद करो। इसका हिस्सा बनो। वाह।

तो, क्या यारोबाम के पास कोई वास्तविक विकल्प था? मुझे यकीन है कि उसके पास था। लेकिन तथ्य यह है कि उसने जो किया वह मेरे विचार से एक बुरा विकल्प था, वास्तव में, यह वही था जो परमेश्वर ने इन सब के माध्यम से पूरा करने का इरादा किया था। इसलिए, लोग कहते हैं, अपने घर की देखभाल करो।

दाऊद में हमारा क्या हिस्सा है? यिशै के बेटों में हमारा क्या हिस्सा है? अपने तम्बुओं में, इस्राएल, अपने घराने की देखभाल करो, दाऊद। जब मैं उस अंश को देखता हूँ, तो मैं इस भावना से बच नहीं सकता कि उत्तरी जनजातियाँ बहुत ही सचेत रूप से कह रही हैं कि हम उस काम में हिस्सा नहीं लेंगे जो परमेश्वर दाऊद के घराने के माध्यम से करना चाहता है। दाऊद और घराने के बार-बार संदर्भों से मुझे लगता है कि वे जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं।

वे कह रहे हैं, ठीक है, ठीक है, शायद भगवान ने डेविड को सभी शताब्दियों तक एक घर देने का वादा किया है। शायद भगवान ने डेविड को एक स्थायी राजवंश देने का वादा किया है। खैर, उसके लिए अच्छा है, लेकिन हम इसका हिस्सा नहीं बनने जा रहे हैं।

ओह, दोस्तों, ओह, दोस्तों, यह कितना खतरनाक रुख है। नहीं, मैं परमेश्वर के साथ मेरे परिवार में, मेरे चर्च में, मेरे घर में, मेरे व्यवसाय में जो कुछ भी करने की कोशिश कर रहा है, उसमें भाग नहीं लूँगा। नहीं, नहीं, मैं वही करने जा रहा हूँ जो मैं करना चाहता हूँ।

मैं वही करने जा रहा हूँ जो मुझे सबसे अच्छा लगता है। अब, फिर से, आप देखिए, हम कह सकते हैं, ठीक है, एक मिनट रुको। नहीं, नहीं, भगवान ने तय किया था कि वे जनजातियाँ अलग हो जाएँगी और दूसरी तरफ जाएँगी।

और वास्तव में, परमेश्वर ने यारोबाम से कहा था, मैं तुम्हें एक स्थायी घर दूँगा यदि तुम मेरी बात मानोगे और दाऊद के समान चलोगे। और मैं फिर से कह रहा हूँ, हाँ, लेकिन उनके पास एक विकल्प था। उन्हें वह करने की ज़रूरत नहीं थी जो उन्होंने किया।

उन्हें जो चुनाव करना था, वह उन्हें करना नहीं था, बल्कि उन्होंने खुद ही किया और उसके लिए वे जिम्मेदार थे। राजाओं की बाकी किताबों, पहले और दूसरे राजाओं में हम जो देखते हैं, वह उसी चुनाव का नतीजा है।

और जैसा कि मैंने कहा, यहाँ पाठ को देखते हुए, मुझे लगता है कि वे जो कर रहे हैं उसके प्रति वे बहुत सचेत हैं। हम दाऊद के घराने से किए गए परमेश्वर के वादे को पूरा करने का हिस्सा नहीं बनने जा रहे हैं। परमेश्वर को इसे अपने आप पूरा करने दें।

हम इसका हिस्सा नहीं बनने जा रहे हैं। अरे, दोस्तों, ऐसा मत करो। ऐसा मत करो।

पता लगाएँ कि परमेश्वर क्या कर रहा है और उसका हिस्सा बनने का चुनाव करें। पता लगाएँ कि वह किस ओर ले जा रहा है और कहें, हाँ, यह सुखद नहीं हो सकता है, शायद मुश्किल हो, लेकिन मैं परमेश्वर की तरफ़ रहना चाहता हूँ, न कि दूसरी तरफ़। जॉन, अपनी पुस्तक, 1 जॉन में कहते हैं कि हमारे पास एक विकल्प है।

हम ईश्वर के राज्य में हो सकते हैं या हम दूसरे राज्य में हो सकते हैं। और वह इसे स्पष्ट रूप से कहते हैं। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ, मैं ईश्वर के राज्य में रहना चाहता हूँ और मैं उसमें भाग लेना चाहता हूँ जो ईश्वर दुनिया में करना चाहता है।

क्या आपको नहीं लगता?